महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन

श्रीमती कविता कुमारी शर्मा
सहायक आचार्य
राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, जयपुर

सारांश - मनुष्य के सम्पूर्ण विकास के लिए शिक्षा को एक आवश्यक तत्व माना गया है। शिक्षा प्रदान करने वाला शिक्षक होता है। शिक्षक को सर्वत्र श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होता है। शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जाती है, जो देश के भावी नागरिक बनने वाले होते हैं उन्हीं के द्वारा राष्ट्र व समाज का विकास सम्भव होता है। यह तभी संभव होता है जब शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत शिक्षक अपने दायित्वों का निर्वाह पूर्ण निष्ठा से करते हैं कार्य संतुष्टि उस कार्य से सम्बन्धित होती है जो शिक्षक को अपने कार्य को पूरा करने पर मिलती है। यह लेख उन प्रमुख कारणों को ज्ञात करने का एक प्रयास है जो कार्यरत शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि को बढ़ाने में सहायक होते है। महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में कार्य संतुष्टि का होना अति महत्त्वपूर्ण व आवश्यक होता है। क्योंकि इन शिक्षकों के द्वारा ही देश के भावी शिक्षकों का निर्माण होता है। अनेक शोधकत्र्ताओं के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि अपने कार्य से संतुष्ट शिक्षक ही कार्य करने के लिए तत्पर तथा अपने कार्यों को पूर्ण निष्ठा से सम्पन्न करते हुए भावी शिक्षकों को अपने दायित्वों को पूरा करने हेतु प्रेरित करते हैं। हांलाकि यह सुनिश्चित कर पाना बहुत मुश्किल होता है कि प्रत्येक शिक्षक अपने वेतन, अवसरों आदि से संतुष्ट होते हैं या नहीं। कार्य संतुष्टि अनेक कारकों पर निर्भर होती है - जैसे वेतन भत्ता अनुभव, वातावरण, उचित अवसर आदि को प्रापत करने के उचित अवसर प्राप्त कर शिक्षक अपने कार्य में संतुष्टि को प्राप्त करते हुए देश के विकास में अपना योगदान देता है।

प्रमुख शब्द- शिक्षक, कार्य संतुष्टि

प्रस्तावना - किसी भी राष्ट्र व समाज की उन्नति शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है, जो कि प्रशिक्षित शिक्षकों पर निर्भर होती है। शिक्षक को ही राष्ट्र व समाज रचयिता माना गया है। विद्यार्थी अपनी आकांक्षाओं व आवश्यकताओं से शिक्षक के माध्यम से जुड़े रहते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को अपने दायित्वों का बोध कराने व उन्हें विकसित करने का माध्यम होते हैं शिक्षण की गुणवत्ता पूर्णतयाः शिक्षक पर आधारित होती है, जो शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट होते हैं वे अपने दायित्वों के प्रति समर्पित रहते हैं। हमारे राष्ट्र में शिक्षकों की नियुक्ति उनकी योग्यता व अनुभव

के आधार पर की जाती है। अधिक योग्यता व अनुभव वाले शिक्षक अपने कार्यों को पूरा करने का सदैव प्रयत्न करते रहते हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि किसी भी समाज में शिक्षक से ही, उस समाज की सांस्कृतिक तथा सामाजिक दृष्टि का पता चलता है।

कार्यसंतुष्टि - कार्यसंतुष्टि से आशय है कि कार्य के प्रति रूचि, पर्याप्त आय, पदोन्नति के अवसर, सामाजिक व आर्थिक स्थिति, सुरक्षा की भावना आदि किसी भी शिक्षक की कार्य संतुष्टि के निर्धारित करने वाले तत्व होते हैं। कार्य संतुष्टि दो शब्दों से मिलकर बना शब्द है। कार्य + संतुष्टि

प्रथम शब्द कार्य का अर्थ - व्यक्ति के द्वारा अपनाया गया व्यवसाय से होता है। दूसरा शब्द संतुष्टि का अर्थ - प्रसन्नता से होता है।जब व्यक्ति के द्वारा किये गये कार्य से उसे प्रसन्नता की अनुभूति होती है, उसे हम कार्य संतुष्टि कह सकते हैं।कार्य संतुष्टि एक प्रकार का आन्तरिक अनुभव होता है। जिसे व्यक्ति अपने मन में कार्य के सम्पन्न होने के पश्चात् आनंद की अनुभूति करता है।

प्रत्येक व्यक्ति की प्रत्येक कार्य में संतुष्टि के भिन्न-भिन्न पहलू होते हैं। शिक्षकों को किन पक्षों से संतुष्टि की अनुभूति होती है। यह जानना आवश्यक होता है। कार्यसंतुष्टि की भावना ही शिक्षक को अपना कार्य करने के लिए प्रेरित करती है, परन्तु कई ऐसे कारण भी होते हैं, जिसके कारण कार्य संतुष्टि प्रभावित होती है और शिक्षक अपने दायित्वों के प्रति उदासीन हो जाते हैं।

शिक्षक-कार्यसंतुष्टि में सम्बन्ध - शिक्षक औरकार्य संतुष्टि में सहसम्बन्ध पाया जाता है। जब शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट होता है तब ही वह भावी शिक्षकों का सफलता पूर्ण निर्माण कर सफल होता है। शिक्षक का सीधा सम्बन्ध शिक्षण से होता है। वह भावी शिक्षकों में दायित्वों को बोध करते हुए उन्हें निर्वाह करने की प्रवृत्ति का विकास कर पाने में सफल होते हैं। साथ ही अपने कार्य के प्रति समर्पण, उच्च चरित्र निर्माण आदि गुणों का विकास कर एक अच्छे शिक्षक बनने के लिए प्रेरित एवं अग्रसर करते हैं। यह सब तभी संभव हो पाता है, जब शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट होता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिक्षक व कार्य संतुष्टि में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। शिक्षकों में कार्य संतुष्टि को निर्धारित करने तथा इसे प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना अत्यंत आवश्यक है। इससे महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के उचित व्यवहार और असंतुष्टि को समझा जा सके, जो कि पहचान करना अत्यंत आवश्यक है। इससे महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के उचित व्यवहार और असंतुष्टि को समझा जा सकें, जो कि उनकी कार्य संतुष्टि को प्रभावित करते हैं।

कार्य संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारण -

शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को अनेक ऐसे कारण प्रभावित करते हैं, जो प्रबंधक के द्वारा नियंत्रित एवं कार्य की प्रकृति से सम्बन्धि होते हैं।

- **लिंग** - लिंग का प्रभाव कार्य संतुष्टि पर स्पष्ट से देखा जाता है। महिलाओं में पुरूषों की तुलना में कार्य संतुष्टि अधिक पाई जाती है।
- **आयु** - आयु का सीधा प्रभाव कार्य संतुष्टि पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कभी -कभी आयु के बढ़ने पर व्यक्ति में संतुष्टि की भावना अधिक बढ़ जाती है।
- **योग्यता** - शिक्षकों की योग्यता भी कार्यसंतुष्टि को प्रभावित करती है, जो शिक्षक अधिक योग्य होते हैं। वे अपने कार्य से पूर्ण संतुष्ट नहीं हो पाते जबकि कम योग्यता वाले अपने कार्य से संतुष्ट होते हैं।
- **वेतन** - किसी न किसी रूप में वेतन भी कार्यसंतुष्टि को प्रभावित करता है। शिक्षक को उचित व पर्याप्त वेतन मिलने पर शिक्षक संतुष्टि की अनुभूति करता है तथा कम वेतन वाले शिक्षक आर्थिक, मानसिक रूप से असंतुष्ट रहते हैं।
- **व्यावसायिक स्तर**- व्यावसायिक स्तर भी कार्यसंतुष्टि को प्रभावित करता है। व्यावसायिक स्तर पर जितना अधिक होगा संतुष्टि का स्तर भी उतना ही अधिक पाया जाता है।
- **पुरस्कार** - पुरस्कार कार्यसंतुष्टि को प्रभावित करते हैं एवं पर्याप्त प्रेरित करने का कार्य भी करते हैं। पुरस्कार प्राप्त शिक्षक में कार्य संतुष्टि का स्तर अधिक होता है।

निष्कर्ष - उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि शिक्षक अपने कार्य में संतुष्टि का अनुभव तभी कर पाने में समर्थ है जब वह पूर्ण रूप से मानसिक व शारीरिक रूप स्वरूप हो उसे अपने विषय का सम्पूर्ण व स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हो साथ ही प्रशिक्षण की व्यवस्था उच्च हो। शिक्षक को वेतनलाभ, पदोन्नति, सम्मान आदि कारकों के विकास के लिए उचित अवसर प्रदान किये जा सकें। शिक्षकों को उपर्युक्त योग्यता के आधार पर पदोन्नति प्रदान की जानी चाहिए। ताकि शिक्षक अपने कार्य से संतुष्टि की अनुभूति कर सके एवम् राष्ट्र के विकास में सहायक बन सकें।

संदर्भ -

- सिंह, अरूण कुमार. (2006). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल, नई दिल्ली।
- कपिल एच.के. (2004). अनुसंधान विधियाँ, वेदांत प्रकाशन, लखनऊ।
- अग्रवाल जे.सी. (2002). एजूकेशनल रिसर्च एन इन्ट्रोडक्सन, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
- सक्सेना, ए.के. (2005). शिक्षा में अनुसंधान, प्वाइंटर प्रकाशन, जयपुर।